मुक्ति कारवां बुलेटिन- 27 सितंबर, 2018

अपराधों की शिकार हो रही हैं ज्यादातर लड़कियां

· मुक्ति कारवां का गिरिडीह जिले में चौथे दिन भी चला जन प्रचार अभियान
· यहां के बच्चे बड़े पैमाने पर ढिबरा (अभ्रक का टुकड़ा) चुनने जाते हैं
· मुक्ति कारवां टीम नुक्कड़ नाटक और लोकगीतों द्वारा बाल दुर्व्यापार के खिलाफ लोगों को कर रही है जागरूक

गिरिडीह जिले के चौथे और अंतिम दिन के प्रचार अभियान के तहत मुक्ति कारवां टीम प्रखंड गांवा, माल्डा और मानपुर पीहरा गांव पहुंची। लोकगीत गाते हुए टीम लोगों को बाल दुर्व्यापार (ट्रैफिकिंग), बाल श्रम के खिलाफ जागरूक करती चली आ रही है।

'गांव शहर में हो रहल बा सुनी ला बाल व्यापार।
लइकन के बाहरी मत भेजिए सुनी ला मोरे यार।
तनी अपने से रहिया होशियार भाई जी।
ना तो ठगी के बनवा शिकार भाई जी।'

उपरोक्त गीत गाते हुए मुक्ति कारवां टीम लोगों को जागरूक करती आ रही है। मंदिर परिसर गांवा में आयोजित कार्यक्रम में जिला उपायुक्त डा. नेहा अरोड़ा, उप विकास आयुक्त मुकुंद दास, जिला शिक्षा पदाधिकारी

पुष्पा कुजूर, अनुमंडल पदाधिकारी डीके सिंह सहित तमाम अधिकारी वहां मौजूद रहे। जिला उपायुक्त डा. नेहा अरोड़ा ने मुक्ति कारवां टीम के सदस्यों का स्वागत करते हुए जन अभियान की तारीफ की और हरसंभव सहायता उपलब्ध कराने की बात कही। उन्होंने अभिभावकों से लड़के और लड़कियों के बीच भेद नहीं करने की अपील की
बाल पंचायत की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चंपा कुमारी ने सभा को संबोधित किया और अशिक्षा, बाल श्रम, भ्रूण हत्या जैसे मसले पर अपनी मार्मिक पीड़ा व्यक्त की। गांव माल्डा के उच्च विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम को स्थानीय विधायक (धनवार) राजकुमार यादव और पुलिस अधीक्षक सुरेंद्र कुमार झा ने मुख्य रूप से संबोधित किया। स्थानीय विधायक सुरेंद्र कुमार यादव ने जिले में बड़े पैमाने पर चल रहे बाल श्रम पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने अभिभावकों से बच्चों को स्कूल भेजने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि थोड़े से पैसे के लालच में ढिबरा (अभ्रक का छोटा-छोटा टुकड़ा) चुनने से उनके बच्चों का भविष्य बर्बाद हो रहा है। ग्रामीणों के अनुसार माल्डा, नंगवा, लक्ष्मीपुर, पटना, बादीडीह, निमाडीह, विशनीटीकर, बलथरवा, चर्की, गोरिया चूं, खरसान,देवतन, एक हवाई, ग़दर, काला पत्थर, कटौर जैसे गांव के बच्चे बड़े पैमाने पर ढिबरा चुनने जाते हैं। बाल श्रम का यहां बड़े पैमाने पर उपयोग होता है।
पुलिस अधीक्षक सुरेंद्र कुमार झा ने कहा है कि मुझे खुशी होती है कि लड़कियां आगे बढ़ रही हैं। लेकिन यह भी कटु सत्य है कि ज्यादातर अपराध की शिकार भी लड़कियां ही हो रही हैं। यहां के अभ्रक खदानों में बड़े पैमाने पर बच्चों का दुरुपयोग कर ढिबरा चुनवाया जाता है। उनके अपने अभिभावक ही उनके दुश्मन बन बैठे हैं। बड़े-बड़े अस्पतालों में यहां के गरीब बच्चों का अंग भी बेचा जाता है। मानव दुर्व्यापार, मानव अंगों का व्यापार कराना हैवानियत की पराकाष्ठा है। हम सब इंसान हैं सामान नहीं। बाल मित्र की अवधारणा को लागू करते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों से संबंधित केस को देखने के लिए एक बाल मित्र पदाधिकारी होगा जो त्वरित रूप से कार्यवाही करेगा।

बाल पंचायत की राष्ट्रीय अध्यक्ष चंपा कुमारी ने एक लोक गीत गाया जिसमें बच्चियों की स्वतंत्रता की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया गया। अंतिम कार्यक्रम स्थल रहा गांव मानपुर पीहरा। यहां पर मुक्ति

कारवां टीम नारे लगाते हुए पहुंची। 'बाल दुर्व्यापारी भारत छोड़ो, बाल दुर्व्यापार बंद करो, बाल श्रम अपराध है, देश का अभिशाप है।'
मानपुर पीहरा में नुक्कड़ नाटक का मंचन भी किया गया। आज के तीनों कार्यक्रमों में लोगों की भारी भागीदारी रही और करीब3740 लोगों से हम सीधे जुड़े। इस तरह से मुक्ति कारवां टीम शाम में गिरिडीह जिले से दुमका के लिए प्रस्थान कर गई।

मुक्ति कारवां

मुक्ति कारवां एक सचल दस्ता है जो गांव-गांव में घूमकर बाल दुर्व्यापार (ट्रैफिकिंग), बाल मजदूरी और यौन शोषण जैसी बुराइयों के खिलाफ जन जागरुकता फैलाने का काम करता है। इस दस्ते में करीब 10 से 15 नौजवान होते हैं, जो ज्यादातर बाल दुर्व्यापार और बाल मजदूरी से मुक्त कराए हुए होते हैं। ये नौजवान नुक्कड़ नाटक, दीवार लेखन, जन जागरण गीत, छोटी-छोटी बैठकों और सभाओं के जरिए बच्चों की खरीद-फरोख्त के कारोबार बच्चों के यौन शोषण से रोकने के उपाय और कानूनों के बारे में लोगों को जागरूक करते हैं। मुक्ति कारवां 1997 से शुरू होकर बाल दुर्व्यापार बहुल राज्यों में भ्रमण करते हुए अब तक4 लाख किलोमीटर की यात्रा तय कर लाखों लोगों को बाल दुर्व्यापार के खिलाफ जागरूक कर चुका है।